अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) तीसरे देवलोक के देवों में 47 बोल में से कितने बोल मिलते हैं-
(क) 35 (ख) 34
(ग) 33 (घ) 31 (ग)

(ii) कौनसा मनुष्य है जिसने मोहनीय कर्म को बांधा था, वर्तमान में नहीं बांधता और भविष्य में नहीं बांधेगा-
(क) अलेशी (ख) अयोगी
(ग) केवलज्ञानी (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

(iii) कौनसा मनुष्य है जो आयुकर्म को भविष्य में बांधेगा ही-
(क) कृष्णपक्षी (ख) मिश्रदृष्टि
(ग) मनःपर्यवज्ञानी (घ) अवेदी (क)

(iv) एक नारकी दूसरी नारकी से अवगाहना की अपेक्षा हो सकता है-
(क) एक स्थानपतित (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुःस्थानपतित (घ)

(v) जघन्य अवगाहना वाले मनुष्य स्थिति की अपेक्षा परस्पर होते हैं-
(क) एक स्थानपतित (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुःस्थानपतित (ग)

(vi) मनुष्य भव में जो अवधिज्ञान लेकर उत्पन्न होता है, वह है-
(क) जघन्य (ख) मध्यम
(ग) उत्कृष्ट (घ) उपर्युक्त तीनों (ख)

(vii) प्रज्ञापना सूत्र के कौनसे पद में जीव पज्जवा का थोकड़ा वर्णित है-
(क) तीसरे (ख)पाँचवें
(ग) आठवें (घ) पन्द्रहवें (ख)

(viii) अठफरसी पुद्गल कम से कम कितने आकाश प्रदेशों पर ठहरते हैं-
(क) एक (ख) संख्यात
(ग) असंख्यात (घ) अनन्त (ग)

(ix) सभी प्रकार के पुद्गलों की उत्कृष्ट स्थिति कितने काल की होती है-
(क) एक समय (ख) संख्यात
(ग) असंख्यात (घ) अनन्त (ग)

(x) एक परमाणु में एक समय में अधिकतम कितने स्पर्श हो सकते हैं-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 8 (क)

(xi) सम्पूर्ण जीवराशि 256 मानने पर जागृत की कितनी राशि बताई है-
(क) 4 (ख) 8
(ग) 252 (घ) 248 (ग)

(xii) अनाकार उपयोग वाले से साकार उपयोग वाले कितने गुणा अधिक हैं-
(क) 32 गुणा (ख) 3 गुणा
(ग) असंख्यात गुणा (घ) अनन्त गुणा (ख)

(xiii) निम्न में से आठों कर्मों के बन्ध की भजना है-
(क) भाषक (ख) पर्याप्त
(ग) अपरीत (घ) आहारक (ख)

(xiv) निम्न में से वेदनीय कर्म के बन्ध की नियमा है-
(क) आहारक (ख) चरम
(ग) केवलज्ञान (घ) सम्यग्दृष्टि (क)

(xv) 50 बोल की बन्धी का थोकड़ा कौनसे सूत्र में चलता है-
(क) प्रज्ञापना (ख) भगवती
(ग) जीवाजीवाभिगम (घ) स्थानांग (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) छठे गुणस्थान वाले नो संज्ञा वाले ही होते हैं। (नहीं)
(ii) अभवी जीव शुक्ल लेशी नहीं हो सकता। (नहीं)
(iii) कृष्णपक्षी जीव चरम शरीरी नहीं हो सकता। (हाँ)
(iv) सास्वादन सम्यक्त्व वाला द्वीन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करता है। (हाँ)
(v) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना युगलिकों में नहीं होती है। (हाँ)
(vi) जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अवधिज्ञान नहीं होता है। (हाँ)
(vii) मनःपर्यायज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता है। (हाँ)
(viii) सभी जीवों के आत्मप्रदेश असंख्यात ही होते हैं। (हाँ)
(ix) एक नैरयिक दूसरे नैरयिक से स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित होता है। (हाँ)
(x) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश की सम्भव नहीं है। (नहीं)
(xi) उत्कृष्ट अवगाहना चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की होती है। (हाँ)
(xii) सुप्त जीवों से जागृत जीव कम हैं। (नहीं)
(xiii) आयुकर्म का बंधकाल 256 आवलिक के आस-पास सम्भव है। (नहीं)
(xiv) अनन्त जीवों में इन्द्रिय का उपयोग करने वाले 224 जीव हैं। (नहीं)
(xv) अनाहारक अवस्था में आयु का बन्ध नहीं होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	शुक्लपक्षी मनुष्य	(क) 6 उपयोग	मोहनीय आश्री 4 भंग
(ii)	अचित्त महास्कन्ध	(ख) तीन गाउ	लोकव्यापी
(iii)	जघन्य अवगाहना	(ग) 500 धनुष	एक आकाशप्रदेश
(iv)	जघन्य अवगाहना वाला मनुष्य	(घ) मोहनीय आश्री चौथा भंग	8 उपयोग
(v)	मनुष्य युगलिक की उत्कृष्ट अवगाहना	(च) छह गाउ	तीन गाउ
(vi)	द्वीन्द्रिय	(छ) लोकव्यापी	5 उपयोग
(vii)	सातवीं नारकी की उत्कृष्ट अवगाहना	(ज) 8 उपयोग	500 धनुष
(viii)	केवलज्ञानी	(झ) एक आकाशप्रदेश	मोहनीय आश्री चौथा भंग
(ix)	तिर्यंच युगलिक की उत्कृष्ट अवगाहना	(य) 5 उपयोग	छह गाउ
(x)	जघन्य अवगाहना वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(र) मोहनीय आश्री 4 भंग	6 उपयोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मुझे छोड़कर शेष 7 कर्मों का बन्ध निरन्तर होता रहता है। आयुष्य कर्म
(ii) मुझमें 47 बोलों में से 40 बोल मिलते हैं। तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(iii) मुझमें आयुष्य का बन्ध करने वाला अगले भव में निश्चित मोक्ष जाता है। सर्वार्थसिद्ध देव
(iv) मुझमें 47 बाल की बन्धी का अधिकार चलता है। भगवती सूत्र
(v) मैं एक ऐसा दर्शन हूँ,जिसे जीव-पज्जवा में उत्पत्ति के प्रथम समय में भी माना है। चक्षुदर्शन
(vi) मैं ऐसा सन्नी मनुष्य हूँ, जिसमें उत्कृष्ट श्रुतज्ञान नहीं होता है। युगलिक मनुष्य
(vii) केवलज्ञानी की अवगाहना मेरी अपेक्षा से चतुःस्थानपतित कही गई है। केवली समुद्घात
(viii) मेरा आशय असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक से है। एकस्थान पतित

(ix) मेरी पर्याय के स्कन्ध आदि चार भेद हैं। रूपी अजीव

(x) मैं और परमाणु दोनों ही सूक्ष्म और अविभाज्य हैं। प्रदेश

(xi) मैं अनन्त परमाणुओं से मिलकर बनता हूँ। अनन्त प्रदेशी स्कन्ध

(xii) मैं ऐसा स्कन्ध हूँ जो कम से कम असंख्यात आकाश-प्रदेशों पर स्थित रहता हूँ। अठफरसी स्कन्ध

(xiii) छह द्रव्यों में से मात्र मैं ही रूपी हूँ। पुद्गलास्तिकाय

(xiv) मैं एक ऐसा गुणस्थान हूँ जिसका प्रथम भाग सवेदी तथा बाद के भाग अवेदी हैं। 9 वाँ गुणस्थान

(xv) हम ऐसे देव हैं जो भवी ही होते हैं। अनुत्तर विमानवासी देव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) अवेदी मनुष्य में वेदनीय कर्म आश्री दूसरा भंग कब मिलता है ?

उ. 13वें गुणस्थान के चरम समय में।

(ii) मनःपर्याय ज्ञानी मनुष्य में आयुकर्म आश्री कौन-कौनसे भंग मिलते हैं ?

उ. पहला, तीसरा, चौथा।

(iii) उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिक की उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिक से स्थिति एवं उपयोग की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. स्थिति- द्विस्थानपतित, उपयोग-9 की अपेक्षा षट्स्थानपतित।

(iv) किस कारण से माना जाता है कि उत्कृष्ट श्रुतज्ञान होने पर भी मोक्ष प्राप्त करना अनिवार्य नहीं है ?

उ. उत्कृष्ट श्रुतज्ञान होने पर भी मारणान्तिक समुद्घात हो सकती है। मारणान्तिक समुद्घात वाले को अगले भव में जन्म लेना ही पड़ता है।

(v) एक समय की स्थिति वाले पुद्गल की एक समय की स्थिति वाले पुद्गल से प्रदेश एवं अवगाहना की अपेक्षा से तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश से षट्स्थानपतित। अवगाहना से चतुस्थानपतित।

(vi) जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से प्रदेश एवं वर्णादि की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश से- षट्स्थानपतित। काले वर्ण की अपेक्षा तुल्य। शेष 19 वर्णादि की अपेक्षा षट्स्थानपतित।

(vii) समुद्घात करने एवं नहीं करने वालों की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. समुद्घात करने वालों से नहीं करने वाले संख्यात गुणा।

(viii) संज्ञी जीवों में आठ कर्म की नियमा-भजना लिखिए।

उ. 7 कर्मों की भजना, वेदनीय की नियमा।

(ix) अपर्याप्त जीवों में आठ कर्म की नियमा-भजना लिखिए।

उ. 7 कर्मों की नियमा, आयु की भजना।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) कृष्ण लेशी नारकी में आयुकर्म आश्री कौनसे भंग मिलते हैं ?

उ. पहला, तीसरा भंग।
कृष्णलेश्या 5,6,7वीं नारकी में नारकी में मिलती है और वहाँ से निकलकर जीव अगले भव में मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता, उसे आयु का बन्ध करना ही पड़ेगा।

(ii) सकषायी मनुष्य में नाम कर्म आश्री कौनसे भंग मिलते हैं ?

उ. पहला, दूसरा भंग।
10वें गुणस्थान तक सकषायी होने से नाम कर्म निरन्तर बन्धता है, अतः तीसरा-चौथा भंग नहीं मिलता।

(iii) अनन्तर उत्पन्न एवं परम्पर उत्पन्न जीवों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ. अनन्तर उत्पन्न में- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव।

जबकि परम्पर उत्पन्न- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए बहुत समय हो गया अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों के अलावा सभी जीवों का समावेश इस में हो जाता है।

(iv) जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से तुलना कीजिए।

उ. द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(v) उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य की उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।

उ. द्रव्य- से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना- चतुस्थानपतित।

स्थिति से तुल्य- बीस वर्णादि और छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित।

(vi) अजीव पज्जवा में द्विस्थानपतित से क्या आशय है ?

उ. द्विस्थानपतित से आशय- 1. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, 2. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक से है।

(vii) जघन्य स्थिति वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य स्थिति वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।

उ. द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(viii) जघन्य अवगाहना वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध की जघन्य अवगाहना वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।

उ. द्रव्य से अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(ix) अपर्याप्त जीवों से पर्याप्त जीवों के संख्यात गुणा होने का कारण स्पष्ट कीजिए।

उ. यह कथन सूक्ष्म जीवों की बहुलता की अपेक्षा समझना चाहिए। क्योंकि सूक्ष्म जीवों में बाह्य व्याघात नहीं होने से उन जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है तथा उनमें अपर्याप्त में मरने वाले जीव थोड़े ही होते हैं, पर्याप्त होकर मरने वाले अधिक होते हैं।